

within Jharkhand, Santhal Pargana, which consists of six districts, Godda, Deoghar, Dumka, Jamtara, Sahibganj and Pakur. Santhal Pargana has over decades witnessed exploitation of its natural resources. Coal mining projects, other mines, etc., have had a pernicious effect of polluting the environment, rivers, air and ground water. Large swathes of open cast mines and millions of tonnes of coal transported in trucks have taken a toll on the health, particularly of the poor. Tuberculosis, asthma and cancer have become common afflictions of the poor who are bearing the brunt of skewed and asymmetric development that Santhal Pargana has been witnessing. Over six decades of independence, Santhal Paragana has no medical college. Given the abject state of health indicators and serious level of environmental pollution, it is indeed the necessity of the day that this most backward area of Jharkhand receives due attention.

Therefore, I urge upon the Government to consider creating a super-specialty medical hospital. The Government is creating six AIIMS like hospitals in the country. A suitable location in Santhal Paragana may be selected for a similar hospital.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Vivek Gupta; not present. Dr. C.P. Thakur; not present.

Demand to declare Vidisha a tourist place

चौधरी मुनब्बर सलीम (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, मैं भारतवर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के मध्य में बसे तथा विदिशा की व्याप्ति आपके माध्यम से भारत सरकार के सामने रखना चाहता हूं, जो भारत के प्राचीन इतिहास में सम्राट अशोक के सुसुराल के रूप में उल्लेखित है, वह विदिशा, जहां महान कवि कालिदास ने महान ग्रन्थ 'मेघदूत' की रचना की। विदिशा के ईर्क-गिर्द दुनिया की प्राचीनतम इमारतें बनी हुई हैं, जिन्हें यूरेस्को ने विश्व धरोहर (World Heritage) के रूप में मान्यता दी हुई है, जिनको देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं। लगभग 7 किलोमीटर पर सांची का महान प्राचीनतम स्तूप स्थित है, जो दुनिया के बौद्ध धर्मावलम्बियों का तीर्थ स्थल है। उदयगिरी की मानव निर्मित पाषाण गुफाएं, जिनमें बने हुए शाहकारे हजारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति और कला का अद्भुत उदाहरण हैं। विदिशा जिले के ग्यारसपुर कस्बे में जैन और ब्राह्मण संस्कृति का हजारों साल पुराना सांस्कृतिक इतिहास शिवालों के रूप में दिखाई देता है। यहीं शाल भंजिका का वह नायाब शाहकारा भी मौजूद है, जो दुनिया में भारतीय कलाकारों का सम्मान बढ़ाता है और यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि भारतीय कलाकार पत्थरों को भी मुस्कराहट और हुस्न दिया करते थे। इसी विदिशा के उदयपुर में महादेव का वह प्राचीन नीलकंठेश्वर मंदिर है, जिसकी कला निहारने

और अर्चना हेतु दूर-दूर से लोग आते हैं। माननीय उपसभापति महोदय, दुनिया की इतनी सारी कला-संस्कृति और धार्मिक धरोहरों को अपने अन्दर समेटे रखने वाला विदिशा राजनैतिक रूप से भी आजाद भारत का बलवान जिला रहा है। एक ही समय में विदिशा नगर मुख्यमंत्री, नेता प्रतिपक्ष और विधान सभा अध्यक्ष तीन महान पदों से विभूषित रहा है। इसके पश्चात् भी विदिशा ने महान भारत के प्रधानमंत्री से लेकर वर्तमान भारत के नेता प्रतिपक्ष को राजनीति में अवसर प्रदान किया है। लेकिन उपसभापति महोदय, मेरा जन्म स्थल विदिशा आज भी बुनियादी सुविधाओं से वंचित है।

मैं भारत सरकार से विदिशा को पर्यटक स्थल के रूप में मान्यता प्रदान करने की पुरजोर मांग करता हूँ। यह विदिशा का जायज अधिकार है, जो उसे मिलना ही चाहिए। धन्यवाद।

[چودھری منور سلیم (ائز پرہیز): اپ سبھا پتی مہودے، میں بھارت-ورش کے بردار استھل مدھیہ پرہیز کے مدھیہ میں بسے اس ودیشا کی ویتها آپ کے مادھیم سے بھارت سرکار کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں، جو بھارت کے پراچین اتھاس میں سمراث اشوک کے سسرال کے روپ میں الیکھت ہے، وہ ودیشا، جہاں مہان کوئی کالی داس کے مہان گرنٹھہ 'میگھہ-دوٹ' کی رچنا کی۔ ودیشا کے ارد گرد دنیا کی پراچینتم عمارتیں بنی ہوئی ہیں، جنہیں یونیسکو نے وشو دھروبر (World Heritage) کے روپ میں مانیتا ہے، جن کو دیکھنے دنیا کے کوئے-کوئے سے لوگ آتے ہیں۔ لگ بھگ 7 کلو میٹر پر سانچی کا مہان پراچینتم استھل استھنے ہے، جو دنیا کے بودھ دھرم-ولمبیوں کا تیرتھ استھل ہے۔ ادے-گری کا مانو نرمت پاشان گپھائیں، جن میں بنے ہوئے شاپکارے بزاروں ورش پرانی بھارتی سنسکرتی اور کلا کا اذہن-بہت اداہرن ہیں۔ ودیشا ضلع کے غیاث پور قصبے میں جین اور بریمن سنسکرتی کا بزاروں سال پرانا سانسکرتک اتھاس شوالوں کے روپ میں دکھائی دیتا ہے۔ یہیں شال بھنجکا کا وہ نایاب شاپکار بھی موجود ہے، جو دنیا میں بھارتی کلاکاروں کا سماں بڑھاتا ہے اور یہ سوچنے پر مجبور کر دیتا ہے کہ بھارتی کلاکار پتھروں کو بھی مسکرات اور حسن دیا کرتے تھے۔ اسی ودیشا کے ادے پور میں مہادیو کا وہ پراچین نیل-کنٹھیشور مندر ہے، جس کی کلا نہارنے اور رچنا ہیتو دور دور سے لوگ آتے ہیں۔

†[Transliteration in Urdu Script]

مانئے اپ سبھا پتی مہودے، دنیا کی اتنی ساری کلا-سنسرٹی اور دھارمک دھروبروں کو اپنے اندر سمیٹے رکھئے والا ودیشا راج-نیٹک روپ سے بھی آزاد بھارت کا بلوان ضلع رہا ہے۔ ایک بی سمرے میں ودیشا نگر مکھیہ منتری، نیتا پرتی-پکش اور ودهان سبھا ادھیکش تین مہان پڑوں سے وبھوشت رہا ہے۔ اس کے پشچات بھی ودیشا نے مہان بھارت کے پردهان منتری سے لے کر ورتمان بھارت کے نیتا پرتی-پکش کو راجنیتی میں اوسر پرداں کیا ہے۔ لیکن اپ سبھا پتی مہودے، میرا جنم استھل ودیشا آج بھی بنیادی سودھاؤں سے ونچت ہے۔

میں بھارت سرکار سے ودیشا کو پریٹک استھل کے روپ میں مانیتا پرداں کرنے کی پرزوں مانگ کرتا ہوں۔ یہ ودیشا کا جائز ادھیکار ہے، جو اسے ملنا بی

چاہئے۔

شri अरविंद कुमार सिंह (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विशेष उल्लेख के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री आलोक तिवारी (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विशेष उल्लेख के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

Demand to set up a branch of National Disaster Management at Hazira Industrial area of Surat district in Gujarat

श्री मनसुख एल. मांडविया (गुजरात): गुजरात राज्य के सूरत जिले के अन्तर्गत आने वाले हजारी औद्योगिक क्षेत्र में देश की कई विशालकाय कंपनियां स्थापित की गई हैं और इन कंपनियों में हजारों करोड़ की पूँजी लगी है। इन औद्योगिक इकाइयों की सुरक्षा एवं प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए बार-बार अत्यधिक डिजास्टर मैनेजमेंट सिस्टम की मांग की जाती रही है, जिससे आपातकालीन परिस्थितियों में जानमाल की कम से कम हानि हो। इन कंपनियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हजारी में स्थित कंपनियों तथा राज्य सरकार के साथ मिलकर भारत सरकार को नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट की एक शाखा की स्थापना करनी चाहिए, परंतु सरकार की तरफ से इस दिशा में अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखने को तब मिला, जब दिनांक 5 जनवरी, 2012 को इंडियन